हिन्दी साहित्य मंडल

इस वर्ष हिन्दी विभााग की ओर से १६ सितंबर २००८ के दिन 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में प्रसिध्द लेखिका सूर्यबाला जी को मुख्य अतिथि के रुप में आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर सूर्यबाला जी ने अपने शुभ हस्त कर कमलों से दीप प्रज्वजित करते हुए हिन्दी साहित्य मंड़ल का उद्घाटन किया। हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रा. अनिल ढवले जी ने सूर्यबाला जी का परिचय देते हुए हिन्दी भाषा में शिक्षण एवं रोजगार के कई मार्गो से छात्रों को अवगत करवाया तथा किस प्रकार हिन्दी देश विदेश में फैली हुई है, किस प्रकार दिन-ब-दिन उसका महत्व विश्वस्तरीय भाषाओं में बढता जा रहा है, इस पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि ''दुनिया के २०२ विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन किया जाता है। विश्व के अन्य लोग हिन्दी को पढकर यहाँ की संस्कृति और सभ्यता को समझना चाहते हैं एवं जिस भाषा ने राष्ट्रीय स्वाधिनता की लड़ाई लड़ी, उस भाषा की ताकत का अंदाजा उन्हें हिन्दी साहित्य से मिलता है। विश्व भूमंड़लीकरण ने हिन्दी को इलेक्ट्रॉनिक मिडीया के आधार पर सशक्त रुप प्रदान किया और हिन्दी भाषा के अनेक रोजगार उपलब्ध कराये जिनकी ओर हमारी युवा पीढी आकर्षित हुई है।'' सूर्यबाला जी ने अपने वक्तव्य में हिन्दी भाषा व उसके साहित्य का महत्व स्पष्ट करते हुए अपने प्रसिध्द उपन्यास 'दीक्षांत' के पात्रों की चर्चा की। उन्होंने यह बताया कि उनके पात्र किस प्रकार शांत, गंभीर होकर अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। वे कहीं पर भी सत्ता का विरोध नहीं करते, उनमें किसी भी विषम परिस्थिति में विद्रोह का भाव प्रकट नहीं होता। वे अपने आस-पास की परिस्थिति से निरंतर जूझते रहते हैं एवं अपने हाथ में आनेवाली निराशा को चुपचाप सहते हैं मानों अपने आप को परिस्थितियों के अधीन करने में उन्हे कोई झीझक महसूस नहीं होती। वे अपने आप पर आनेवाली परिस्थिति के अनुरुप अपने को सहजता से ढ़ाल लेते हैं। पूरी ईमानदारी, निष्ठा एवं लगन से अपने कार्य के प्रति सजग रहते हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी बिना किसी शिकायत के जीने में उन्हें कोई आपत्ती नहीं है। इस प्रकार उन्होंने साहित्य में अपने पात्रों के सकारात्मक सोच को दर्शाने की कोशिश की। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष पद पर हमारे महाविद्यालय की प्रिय प्राचार्या डॉ. शकुंतला सिंह मॅडम जी सुशोभित हुईं। उन्होने हिन्दी भाषा एवं राष्ट्र के प्रति प्रेम को अपने सुमधुर शब्दों में व्यक्त किया।

विभाग ने अपना अगला कार्यक्रम ६ जनवरी २००९ को प्रस्तुत किया। जिसमें प्रसिध्द लेखिका मन्नू भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी' पर आधारित मराठी फिल्म 'एवढंसं आभाळ' का प्रक्षेपण किया गया। जिसमें अनेक छात्रों ने साहित्य को पर्दे पर देखा व पढा। उपन्यास से बनी इस फिल्म में विधास्थानांतरण की बात प्रमुख रुप से दृष्टिगोचर होती है उपन्यास में चित्रित किये गये वर्णन को पर्दे पर साकार करने में बहुत सारी तब्दिलियाँ हो जाती हैं, उसके अर्थ एवं परिणाम बदल जाते हैं। इससे यह भी पता चलता है कि कालजयी कृतियों पर सिनेमा बनाने से बहुत सारी बाते बड़ी आसानी से समाज में संवाहित की जा सकती हैं। फिल्म प्रक्षेपण के बाद इस फिल्म के एडिटर जयंत जठार जी के द्वारा फिल्म पर किये गये कार्य व निर्माण में आनेवाली समस्याओं पर चर्चा की गई।

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी शैक्षणिक सहल का आयोजन विभाग की ओर से किया गया। प्रकृति से रू-ब-रू होने के लिए मुंब्रा के पहाड़ पर बसी मुंब्रा देवी मंदिर को भेंट दी गई इसके साथ छात्र-छात्राओं ने प्रकृति की गोद में बैठ कर स्वरचित काव्य पठन कार्यक्रम का आनंद लिया जिसमें प्रा.कु.जयश्री सिंह एवं विभागाध्यक्ष प्रा. अनिल ढवले ने भी अपनी चुनिंदा कविताओं का आस्वादन करवाया।

इस तरह के आयोजन से छात्रों में उत्साह भरने का काम विभाग समय-समय पर करता रहा है। जिससे छात्रों की बौद्धिक क्षमता को गतिशीलता मिलती है एवं छात्रों के सृजन से सटीक धरोहर का साक्षात्कार होता है।

प्रा.अनिल ढवले
हिन्दी विभागध्यक्ष